**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना**

**मो० न० 9546743796**

**Email –** [**mishrasm966@gmail.com**](mailto:mishrasm966@gmail.com)

**B.A. III**

**रस निष्पत्तिक सिद्धांत**

**“ विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्ति: | “**

**आचार्य भरत मुनिक मान्यता छनि जे विभाव , अनुभाव एवं संचारी भावक संयोग सँ रसक निष्पत्ति होइत अछि | ओ अपन एहि रस सूत्र कें आओर स्पष्ट करबाक हेतु प्रपाणक रस – न्यायक आश्रय लेलनि| प्रपाणक रस – न्यायक आधार पर भरत मुनि अपन सूत्र कें स्पष्ट करैत कहलनि जे जाहि प्रकारें नाना प्रकारक व्यंजन , औषधि एवं द्रव्यादिक संयोग सँ रस निष्पन्न होइत अछि एवं जाहि प्रकारें गुड़ आदि पदार्थ एवं अन्य – अन्य व्यंजन तथा औषधि सभ मिश्रित रहनहुँ मधुर , अम्ल , लवण , तिक्त ,कटु , एवं कषाय आदि विभिन्न प्रकारक रस उत्पन्न होइत अछि ,ओहिना नाना प्रकारक भाव सभ कें प्राप्त स्थायी भाव सेहो रस बनी जाइत अछि |**

**आचार्य स्वयं कहलनि जे रस की थिक ? आओर पुनः स्वयं एकर उत्तर दैत कहलनि जे , जे आस्वाद्य अछि सएह रस थिक | पुनः ओ स्वयं प्रश्न उठौलनि जे रस रस आस्वादनक क्रिया कोना सम्पन्न होइत अछि | स्वयं पुनः एकर उत्तर देलनि जे जाहि प्रकारें नाना प्रकारक व्यंजन सभक मेल सँ बनल भोजन कएनिहार सु मन सँ हर्षादि कें प्राप्त करैत छथि तहिना वाणी , अंग आदि सभसँ स्वाभाविक रूपेण सूचित भेनिहार क्रिया सभसँ व्यंजित होइत स्थायी भाव सभक सहृदय सामाजिक आस्वादन करैत छथि तथा हर्षादि कें प्राप्त करैत छथि |**

**अपन रस सूत्रक ओतवा व्याख्या करितहुँ आचार्य भरत मुनि अपन रस सूत्रक ‘ संयोग ‘ आ ‘निष्पत्ति’ एहि दू शब्दक प्रयोग द्वारा हुनक अभीष्ट की छल से हुनक परवर्त्ती आचार्य लोकनि नहि बुझि सकलाह | फलस्वरूप ई दुनू शब्द विवादास्पद बनि गेल तथा परवर्ती आचार्य लोकनि भिन्न – भिन्न अर्थ कए अपन – अपन मतक स्थापना कएलनि एवं एहि सम्बन्धी हिनका लोकनिक मत विभिन्न वादक रुपमे प्रचलित अछि |**

**भरत मुनिक रस सूत्रक प्रथम व्याख्याता आचार्य भट्टलोल्लट छथि | हिनक मत छनि जे विभाव , अनुभाव , व्यभिचारी भावक संयोग कारण रूप अछि जाहिसँ रसक उत्पत्ति होइत अछि | अतएव संयोगक तात्पर्य कारण – कार्य सम्बन्ध आओर निष्पत्तिक तात्पर्य उत्पत्ति भेल | एहि कारणें हिनक ई मत उत्पत्तिवाद कहबैत अछि | लोल्लटक अनुसारें एकर व्याख्याक भाव ई अछि जे वास्तवमे रसानुभूति त अनुकार्यहि मे होइत अछि | जकर अभिनेता अभिनय करैत अछि , ओहि वास्तविक चरित्रमे त रसक स्थिति रहैत छल , मुदा अभिनेताक तदनरूप वेश – भूषाक कारणें एवं ओकर कुशल अंग – संचालन , अभिनय , वार्तालाप आदिक सहायता सँ दर्शक वा सामाजिक अभिनेतामे वास्तविक चरित्रक आरोप कए लैत छथि | आरोप करबाक कारणें सामाजिक मे सेहो रसक अनुभूति होइत अछि | आरोपक बात मानबाक कारणें हिनक मत आरोपवाद सेहो कहबैत अछि | एहि प्रकारें विभादिक संयोग सँ अनुकार्य मे रसक उत्पत्ति भेल , ओ अनुभावक संयोग सँ प्रतीत भेल आओर व्यभिचारीक संयोग सँ पुष्ट भेल | वास्तविक रस अनुकार्य मे होइत अछि | प्रेक्षक मे रस केवल प्रतीत होइत अछि | एहि उत्पत्तिवादक मतक अनुसारें रस वाच्य होइत अछि ; व्यंग्य नहि | ई मत मीमांसा – सम्मत अछि किएक त लोल्ल्ट मीमांसावादी छलाह | जाहि प्रकारें पुरोहितक माध्यम सँ यज्ञादिक फल यजमान कें प्राप्त होइत छनि , ओही प्रकारें अभिनेताक माध्यम सँ दर्शक कें रसक प्रतीति होइत छनि |**

**लोल्लटक उत्पत्ति आरोप प्रतीतिवाद सँ कतेको शंकाक समाधान नहि होइत अछि | पहिल शंका त ई जे शास्त्रीय दृष्टि सँ विभावादि कारण सँ रस की कार्य रूप मे उत्पन्न होइत अछि ? कारणक नहि रहला पर ज कार्य रहैत अछि त की उत्पन्न रस विभावादि कें हँटि गेला पर सेहो बनल रहैत अछि? ओकरा रस कतए धरि कहल जा सकैत अछि आओर ओहिसँ प्रेक्षक मे रसक प्रतीति कोना भए जाइत अछि ? स्थायीभाव त अनुकारी मे अछि , तखन अभिनेता मे आरोप कएला सँ प्रेक्षक लोकनि कें रसानुभूति कोण प्रकारें भए सकैत अछि | आरोपक बात सेहो शंका मे कए दैत अछि |**

**आरोप ओही वस्तुक कएल जाइत अछि जकर परिचय पूर्वहि सँ रहैत अछि | जखन अनुकार्य कें कखनो देखले नहि गेल , तखन कोना अनुकर्ता मे अनुकार्यक आरोप कए लेल जाइछ ? ज प्रेक्षक वा दर्शक मे केवल रसक प्रतीति मानि लेल जाए त की रसानुभूति केवल प्रतीति अछि , हार्दिक अनुभूति नहि? एहि शंकाक समाधान उत्पत्ति वा आरोपवादसँ नहि भए पबैत अछि |**

**( क्रमशः )**